बी०ए० पार्ट II हिन्दी प्रश्न 1

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

उपर्युक्त ग्रंथों की विषय वस्तु और उद्देश्यों पर यदि ध्यान दिया जाए तो स्पष्टतः ये सभी अपने-अपने राजाओं और आश्रयदाताओं की प्रशंसा तथा उनकी वीरता के बखान से भरे पड़े हैं। यद्यपि इन ग्रंथों की वस्तु में विविधता है किन्तु उनके केन्द्र में आश्रयदाता रहे हैं। यह प्रवृत्ति प्रायः 1350 संवत तक उपलब्ध होती है। यह तो सत्य है कि विवेच्य काल राजनैतिक अस्थिरता एवं युद्धों का काल रहा है। अतः समाज की विशेषताओं एवं उनकी स्थितियों का चित्रण यदि तत्कालीन साहित्य में उपलब्ध हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं हो सकती। इन्हीं विशेषताओं के कारण ही संवत 1050 से 1375 संवत तक के काल में समान प्रवृत्ति को देखते हुए इस काल को वीरगाथा काल या आदिकाल के नाम से संबोधित किया गया है।

इसके बाद हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक चमत्कार दिखलाई पड़ता है। डॉ० जार्ज ग्रियर्सन इसे बिजली की चमक की तरह देखते हैं जो देखते ही देखते समूचे परिदृश्य पर छा जाती है। यह बात रेखांकित करने योग्य है कि अभी-अभी आदिकाल में आश्रयदाताओं की प्रशंसा हेतु साहित्य रचना हो रही थी किन्तु संवत 1375 आते-आते साहित्य सृजन में गुणात्मक परिवर्तन आ गया और साहित्य का स्वर भक्तिमय हो गया। ऐसा क्यों हुआ इसका विवेचन हर विद्वान अपने-अपने ढंग से करता है। किन्हीं की मान्यता है कि यह पराजित मानसिकता से उत्पन्न निर्वेद है जो भक्ति के रूप में विकसित हुआ है, दूसरा पक्ष इसे दक्षिण के आलवार संतों के प्रभाव से पैदा हुआ सहज भक्तिभाव के रूप में देखता है।

notes
Phone
email
website